भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्रियों का योगदान

***सना आफताब एवं **तबस्सुम जहाँ**

*शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

**शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

सारांश

वर्तमान समय की बात करे, तो हर एक क्षेत्र में लैंगिक समानता की बात कही जाती है। जिसके तहत महिलाओं को हर क्षेत्र में प्राथमिकता प्रदान की जाने लगी तथा कुछ विशेष क्षेत्र में उनको आरक्षण भी प्राप्त हुए है। प्रत्येक काल में कुछ विदुषी महिलाएं सामने आई हैं जिन्होंने हर क्षेत्र में अपनी विद्वता का परिचय दिया है। आज के समय में महिलायें काफी सशक्त है| परंतु देश के प्रत्येक क्षेत्र व स्थान पर ऐसा नहीं है आज भी हमारे देश के कई क्षेत्र व स्थान ऐसे हैं जहां महिलाओं का शोषण होता है महिलाएं आज भी इतनी सशक्त नहीं है जितनी होनी चाहिए इसलिए यह अति आवश्यक है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान का सृजन कर आधुनिक समाज में स्त्रियों की परिस्थितियों में सुधार किया जायें। प्रस्तुत लेख में प्रमुखता जोर भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्रियों के योगदान पर दिया गया है जिससे आज की युवा पीढ़ी प्रेरणा लेकर अपने जीवन को बेहतर बना सकती है इसके लिए द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से आंकड़ों का संकलन कर उनके आधार पर स्त्रियों के बलिदान व योगदान का विश्लेषण किया गया है।

संकेत शब्द - *भारतीय ज्ञान परंपरा, स्त्रियाँ, योगदान।*

प्रस्तावना –

हमारा देश काफी लम्बे समय तक मुगलों व ब्रिटिश शासन के अधीन रहा है जिन्होंने हमारी शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन के माध्यम से अपनी सभ्यता और संस्कृति को यहाँ के वातावरण में घोल दिया है जिसकी वजह से हमारी सभ्यता–संस्कृति आज वैसे रूप में नहीं हैं, जैसे सदियों पूर्व थी जिसका मुख्य कारण परसंस्कृतिकरण व संस्कृतिकरण हैं, जिससे लोग पाश्चात्य सभ्यता से काफी प्रभावित है जिसके परिणामस्वरूप हम अपने देशी ज्ञान से बहुत दूर होते जा रहे है। भारतीय शिक्षा व संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत आवश्यक है। भारत विश्व भर की जो ज्ञान परम्परायें है उनका संश्लेषणात्मक केंद्र बना रहा है 'ज्ञान' भारतीय ज्ञान परंपरा में सबसे बड़े उपकरण के रूप में वर्णित है-

"ज्ञानात परतरं न हि"

भारतीय शिक्षा परंपरा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करने में सक्षम है। भारतीय ज्ञान परंपरा में मूल्यों को प्राथमिकता दी जाती है। भारत का विश्व गुरु बनने के लिए आवश्यक है कि यहां भारतीय ज्ञान परंपरा का सृजन किया जाए क्योंकि इसमें आधुनिक चिंतन व विज्ञान प्रबंधन के साथ–साथ सभी क्षेत्रो के लिए अद्भुत खजाना है। एक मनुष्य को ज्ञानवान बनाने के लिए ज़रूरी है की माता शिक्षित हो क्योंकि माता एक बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है।

"अथ शिक्षा प्रवक्ष्यामः
मातृमान् पितृमानाचार्यवान पुरूषो वेदः।"

अर्थात, जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य हो तो तभी मनुष्य ज्ञानवान होगा।

स्त्रियों ने समाज में अपने सम्मान तथा अधिकारों के लिए काफी संघर्ष किया है। वैदिक समय से लेकर आज तक स्त्रियों ने काफी संघर्ष कर ज्ञान, विज्ञान, चिकित्सा आदि सभी क्षेत्रों में अपनी पहचान बनायीं भारतीय समाज व संस्कृति अपनी अद्भुत सभ्यता व संस्कृति के लिए संपूर्ण विश्व में आज भी जानी जाती है। हर एक क्षेत्र में चाहे वह शिक्षा हो, धर्म हो, या शिष्टाचार सभी में वह अपनी एक अनोखी छाप रखती है। परंतु कुछ बाह्य आक्रमणों व विदेशी शासन के कारण भारतीय संस्कृति व ज्ञान परंपरा में कुछ बदलाव हुए, साथ ही पश्चात संस्कृति से प्रभावित युवा पीढ़ी कहीं ना कहीं अपने मूल्यों व संस्कारों को भूलती जा रही है या उनसे दूर होती जा रही है। जिसके परिणामस्वरुप हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह विचार प्रस्तुत किया गया कि हमें अपनी भारतीय ज्ञान परंपरा व व्यवस्था को एक मार्गदर्शक के रूप में मान्यता दी जाए जिसके माध्यम से आने वाली पीढियों को अवगत कराया जाए तथा भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ों को और मजबूत किया जाए। हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा जिसमें ज्ञान के साथ–साथ विज्ञान व जीवन दर्शन का भी समावेश है इस परंपरा ने हमारी शिक्षा, प्रशासन, न्याय, कानून, स्वास्थ्य और वाणिज्य जैसे क्षेत्रों को भी बढ़ावा दिया है इसके द्वारा हमारी शास्त्रीय व अन्य भाषाएं भी अछूती नहीं रही हैं। वैदिक काल ने स्त्री को एक रत्न की संज्ञा दी है। अथर्व वेद में स्त्री के सम्मान को वर्णित करने वाला एक श्लोक दृष्टव्य है–

"अनुव्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु सम्मनाः।
जाया परये मतुमतीं वाचं यददु शान्तिवाम॥**

भारतीय ज्ञान परंपरा एक जीवंत तथा समृद्ध परंपरा है इस परंपरा ने प्राचीन काल से लेकर आज आधुनिक युग तक भारत की सांस्कृतिक, दार्शनिक, धार्मिक तथा वैज्ञानिक धरोहर को अपने में समाहित किया है, इसकी विधाओं में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, कला, संगीत, योग, नाटक व आयुर्वेद प्रमुखतः शामिल है।

भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध करने में जितना योगदान पुरुषों का रहा है उतना ही स्त्रियों का भी रहा है। हर काल में स्त्रियों ने अपना योगदान किसी न किसी रूप में दिया हैं। हड़प्पा सभ्यता में नारी को बहुत उच्च स्थान प्राप्त था। उसके बाद भारत में वैदिक सभ्यता आई, जो कि पुरुष प्रधान सभ्यता थी। इस सभ्यता में स्त्रियों की स्थिति थोड़ा दयनीय थी परंतु स्थिति इतनी भी दयनीय नहीं थी, जितना की आगे की सभ्यताओं में हो गई। स्त्रियों की स्थिति कितनी भी दयनीय रही हो, स्त्रियों ने हर क्षेत्र में अपना योगदान दिया तथा अपने अधिकारों की मांग की भले ही वह इन्हें विद्रोह करके ही प्राप्त क्यों ना हुआ हो। स्त्रियाँ भी भारतीय ज्ञान परम्परा की संवाहक रही है। स्त्रियों के योगदान ने भारतीय ज्ञान परंपरा को पूरे विश्व में अद्भुत पहचान दी है। निम्नलिखित तालिका में कुछ उन स्त्रियों के नाम दिए गये है जिन्होंने प्राचीन काल से आधुनिक युग तक विभिन्न क्षेत्रों में अपना अतुलनीय योगदान दिया–

तालिका संख्या 01 प्राचीन काल से आधुनिक काल तक विभिन्न क्षेत्रों में प्रसिद्ध भारतीय स्त्रियाँ

साहित्य	सगुणा, मीराबाई, महादेवी वर्मा, अपाला, कंठिक, गजानंद देवी
धार्मिक ग्रन्थ	गार्गी, मंगलाचारी
समाज तथा राजनीति	रानी लक्ष्मीबाई,सरोजनी नायडू, रानी चेन्नम्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान
योग तथा ध्यान	सिद्धयोगिनी, महामंडलेश्वर, ललिता सहस्रनाम, सर्वज्ञा, स्वामी तातापी
कला तथा शिल्प	मधुबाला, लता मंगेशकर
विज्ञान तथा गणित	रुद्रदा देवी
शिक्षा	सावित्रीबाई फुले

चिकित्सा	डॉ. आनंदीबाई जोशी
अंतरिक्ष	कल्पना चावला

भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्रियों के योगदान को जानना क्यों आवश्यक है?

वैदिक काल से आधुनिक काल तक की विदुषी महिलाओं का अध्ययन करने के बाद यह देखा जा सकता है, कि अधिकांश स्त्रियाँ संघर्ष करके ही सफल हुई है। आज भी देश में स्त्रियों की स्थिति दयनीय है। 2023 में मणिपुर की घटना जिसमें दो स्त्रियों को निर्वस्त्र करके घुमाया गया तथा 2024 की पश्चिम बंगाल की घटना जिसमें एक चिकित्सक लड़की का बलात्कार किया गया। यह घटनाएं इस बात का प्रमाण देता है, कि हमारे देश की स्त्रियों को रानी लक्ष्मीबाई तथा अन्य स्त्रियों से प्रेरणा लेकर अपने सम्मान की रक्षा करनी चाहिए, अपने को इतना मजबूत बनाना चाहिए कि कोई उनका शोषण न कर सके तथा अपने को सफल बना सके और यह सब तभी संभव है जब आज की युग की स्त्रियाँ उन देशी स्त्रियों के बारे में जाने इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्रियों के योगदान को जानने की आवश्यकता है।

शोध पद्धति

द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से आंकड़ों का संकलन कर उनके आधार पर स्त्रियों के बलिदान व योगदान का विश्लेषण किया गया है। इन स्त्रोतों के माध्यम से वैदिक काल से लेकर अब तक स्त्रियों की भागीदारिता व योगदान का स्पष्ट एवं रोचक वर्णन किया गया है।

वैदिक काल से आधुनिक काल तक स्त्रियों का योगदान

स्त्रियाँ समाज की मुख्य स्तंभ है, बिना स्त्रियों के इस ब्रह्मांड की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में योगदान करने में स्त्रियों ने काफी संघर्ष किया। स्त्रियों के योगदान का विवरण निम्नलिखित हैं–

गार्गी–

गार्गी वैदिक काल की एक विदुषी महिला थी। इनका पूर्ण नाम वॉचकन्वी गार्गी था। ज्ञान परंपरा में यह देश की विशिष्टम दार्शनिक तथा युग प्रवर्तक थी। यह वेदों की प्रसिद्ध व्याख्याता थी। इनका ज्ञान भारतीय ज्ञान परंपरा को सुशोभित करता है। ऋषि वचक्नु की पुत्री गार्गी जिन्हें वैदिक भविष्यवक्ता भी माना जाता है उन्होंने अनेकों भजनों की रचना की जिसमे प्रमुख बल अस्तित्व की उत्पत्ति पर दिया गया है विदेह के राजा ने एक दार्शनिक सम्मलेन 'ब्रहमज्ञान' का आयोजन किया था जिसमे केंद्रबिंदु अग्नि संस्कार के इर्द– गिर्द घूमता थाद्य जिसके प्रतिभागियों में से गार्गी भी एक थी जिन्होंने ऋषि याज्ञवल्क्य को अनेक सवाल जिसका सम्बन्ध 'आत्मा या आत्मन' के सवालों की चुनौतियां दी थी जिसने उन्हें भ्रमित कर दिया था तथा साथ ही उनके प्रश्न तार्किकता से युक्त होते थे, जो कि वैदिककालीन दार्शनिको व साहित्यकारों को भी आश्चर्यचकित कर देते थे

लोपामुद्रा–

ऋग्वेद जिसे शाही ज्ञान भी कहा जाता है जिसमे ऋषि अगस्त्य और उनकी पत्नी लोपामुद्रा के बीच लम्बी बातचीत का विवरण मिलता है जो उनकी महान बुद्धिमत्ता और अच्छाई का प्रमाण देता है

मैत्रेयी–

ऋग्वेद के 1027 सूक्त है जिसमे से लगभग 10 सूक्त मैत्रेयी को समर्पित है मैत्रेयी एक दार्शनिक व भविष्यवक्ता महिला थी उन्होंने अपने पति ऋषि याज्ञवल्क्य के व्यक्तित्व को चमकाने व उनके आध्यात्मिक

विचारों को उन्नत करने में अद्भुत योगदान दियाद्य मैत्रेयी एक 'ब्रह्मवादिनी' थी तथा वह हिन्दू शास्त्रों में भी पारंगत थी

अपाला–

अपाला एक मेधावी महिला थी। वह अत्यंत कुशाग्र बुद्धि की थी। यह वेदों की ऋचाएं एक बार पढ़कर ही कंठस्थ कर लेती थी। यह चारों वेदों को याद कर जल्द ही वेदज्ञ हो गई थी। इनको बचपन से ही चर्म रोग था, जिसकी वजह से उनके पति भी उनसे घृणा करने लगे थे। फिर वह अपने पिता के आश्रम लौट आई और तप करते हुए देवराज इंद्र के प्रशस्ति मंत्रों की रचना की। इससे खुश होकर देवराज इंद्र ने इनके चर्म रोग को ठीक होने का वरदान दिया। अपाला का व्यक्तित्व व ज्ञान भारतीय ज्ञान परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

अनसूया–

एक तपस्वी व हिन्दू धर्म के प्रख्यात ऋषि अत्रि की पत्नी थी अनसूया जिनके बारे में हिन्दू ग्रंथों में देवहुती और प्रजापति कर्दम की पुत्री का विवरण प्राप्त होता है वह कठोर जीवनयापन करके एक धर्मपरायण महिला का जीवन व्यतीत करती थी जिन्हें अनेक चमत्कारी शक्तियों से युक्त माना गया है ऋषि कपिला जोकि अनसूया की बहन थी उन्हें सती अनसूया (तपस्वी अनसूया),माता अनसूया (मां अनसूया) तथा ऋषि अत्रि की पवित्र पत्नी के रूप में जाना जाता है वह विष्णु के ऋषि अवतार ब्रह्मा के एक और रूप दुर्वासा, चंद्र, दत्तात्रेय और शिव के चिड़चिड़े ऋषि अवतार की माँ बनती थी

घोषा–

वैदिक काल में ऋषि घोषा एक भारतीय दार्शनिक व द्रष्टा थी उन्हें वेदों में पारंगतता हासिल थी उन्होंने ऋग्वेद में दो भजन भी दिए थे घोषा को 'मंत्रद्रिका' भी कहा जाता था जिसका अर्थ होता है मंत्रो में पारंगत होना जिन्हें ब्रह्मवादिनी (ब्राह्मण की वक्ता) या उद्घोषक के रूप में जाना जाता है अत: उन्होंने एक आध्यात्मिकतापूर्ण जीवन जिया अश्विनी कुमारों की प्रशंसा करते हुए घोषा ने दो भजन लिखे, जो ऋग्वेद के दसवें मंडल के दो सूक्तो में समाहित है अध्याय ग के भजन में अश्विन की प्रशंसा की गयी है तथा दूसरे भजन में उनकी अंतरंग भावनाएं एवं इच्छाएं, जो विवाहित जीवन से सम्बन्धी उनकी व्यक्तिगत इच्छा को व्यक्त करता है उनके दो भजन है–

"अश्विन तुम्हारा तेजस्वी रथ – यह अपने मार्ग पर कहाँ जा रहा है? वीरों, इसे तुम्हारे लिए कौन सजाता है, ताकि यह भोर से शुरू होकर प्रत्येक सुबह हर घर का दौरा करे, प्रार्थना के माध्यम से यहाँ तक बलिदान तक ले जाए?"

"अश्विन, तुम शाम को कहाँ हो, सुबह कहाँ? तुम्हारा विश्राम स्थल कहाँ है, रात को तुम कहाँ विश्राम करते हो? हे वीरों, मैं तुमसे यही विनती करता हूँ। श्दिन में मेरे पास रहो, रात में मेरे पास रहो। "

रोमशा–

बृहस्पति की पुत्री और राजा स्वनाय भावयब्य की पत्नी रोमशा का भी भारतीय ज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान रहा है रोमशा को सामवेद में कई मंत्रो को प्रदान करने का श्रेय दिया गया है रोमशा उन महिलाओ में से एक है जिन्होंने अपना योगदान ऋग्वेद के एक भजन के रूप में भी प्रकट किया रोमशा एक ब्रह्मवादिनी थी, जिनका उपनयन संस्कार वैदिक साहित्य का अध्ययन और सावित्री वचन (उच्च अध्ययन) भी किया गया था उन्होंने ऋग्वेद की पहली पुस्तक के 126वें भजन को प्रकट किया। रोमशा ने वैदिककालीन भारतीय साहित्य में एक ऋषिका, एक महिला ऋषि, व द्रष्टा के रूप में अद्भुत यात्रा तय की हैउस समय कई ऐसी महिलाएं भी थी जिन्होंने कई शुद्ध, श्रेष्ठ और अध्यात्मिक रूप से अपना योगदान दिया जिन्हें वेद

में पारंगतता हासिल थी यहाँ तक कि वह स्वयं रचनाएँ भी रचती थी तथा वह ब्रह्म साधक थी वे इतनी पूजनीय थी कि जो आज तक लोगों के लिए स्मरणीय है और उन्हें सदैव उद्घृत किया जाता रहेगा साथ ही भारतीय इतिहास में उनकी इस यात्रा को दर्ज किया जाता रहेगा

वागंभृणी–

इन्हें वाक् अम्भ्रणी के नाम से भी जानते है। यह एक शक्तिशाली तथा प्रसिद्ध महिला ऋषि थी। वागंभृणी का विवरण ऋग्वेद में है। इन्होंने ऋग्वेद तथा सामवेद में कुछ अंश का योगदान दिया है। इन्होंने कई मंत्र लिखे जो आज भी उच्चरित होते हैं यह प्राचीन कवियों तथा कवित्रियों में से एक कवित्री के रूप में काफी प्रख्यात है। इन्होंने कई कविताएं लिखी तथा देवताओं की स्तुति में सुंदर गीत भी गए थे। उनके दिव्य गीतों का संग्रह भाग 'वाक्सूक्त' के नाम से जाना जाता है, जिसे 'देवी सूक्त' के नाम से भी जानते हैं।

मीराबाई–

मीराबाई एक रहस्यवादी मध्यकालीन भक्त कवित्री थी। उनके साहित्य में श्री कृष्ण की प्रेम भक्ति का वर्णन अधिक मिलता है। उनकी रचनाएं उस समय के सामाजिक मुद्दों के प्रतिबिंब के रूप में हैं। मीराबाई के समय सामंतवादी व्यवस्था का बोलबाला था। नारी के अधिकारों को महत्व नहीं दिया जाता था। उस समय में मीराबाई ने विद्रोह पर शंखनाद किया उन्होंने कहा–

"चोरी करूं न मारगी, नहीं मैं करूं अकाज।
पुन्न के मार्ग चालतां, झक मरो संसार।।"

मीराबाई ने एक समृद्ध भक्ति साहित्य दिया जो ज्ञान को संवर्धित करने में उपयोगी है। इनका साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इनकी भक्ति भावना पक्ष पर अधिक महत्व देती है । मीराबाई ने उच्च सिद्धांतों व विचारों को सहजता से बताया है जो कि आज के आधुनिक युग की समस्याओं को हल करने के लिए उपयोगी है ।

रानी चेन्नम्मा–

इनकी वीरता आधुनिक युग की स्त्रियों के लिए प्रेरणा है। यह अंग्रेजों का विरोध करने वाली पहली भारतीय शासक थी। चेन्नम्मा रण कौशल तथा युद्ध कौशल में निपुण थी। इन्हें 'कर्नाटक की लक्ष्मीबाई' कहते हैं। इन्हें 'कित्तूर की रानी' के रूप में भी जाना जाता है। यह महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता के लिए प्रेरणास्रोत है। रानी चेन्नम्मा के ज्ञान ने भारतीय ज्ञान परंपरा के खजाने में बढ़ावा किया है।

रानी लक्ष्मीबाई–

भारतीय इतिहास रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान के बिना अधूरा है 1857 के भारतीय विद्रोह में इनकी ऐतिहासिक भूमिका थी। युद्ध के मैदान में युद्ध करने की कुशलता, घुड़सवारी आदि के उनके ज्ञान ने भारतीय ज्ञान परंपरा को सुशोभित किया है ।

"अपने हौसले की एक कहानी बनाना,
हो सके तो खुद को झांसी की रानी बनाना।"

यह वक्तव्य आज की नारियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है|

सुभद्रा कुमारी चौहान–

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्र प्रेम की भावना से उत्प्रोत थी, जिसकी झलक उनकी कविताओं में दिखती है। उनकी कविताओं का मुख्य प्रतियाय प्रेम एवं वात्सल्य हैं। उनकी कविताओं में देश प्रेम, लौकिक प्रेम तथा आध्यात्मिक प्रेम प्रमुख रूप से देखने को मिलता है। उनकी रचनाएं प्रियतम के प्रति प्रेम का भाव,

देवों के प्रति श्रद्धा भाव, भ्राता के प्रेम, राजनैतिक आंदोलन आदि को दर्शाते हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी रचनाओं में कृतियों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा में विशेष योगदान दिया।

महादेवी वर्मा–

महादेवी वर्मा का कर्म क्षेत्र अध्यापक तथा लेखिका का था। उनकी मुख्य रचनाएं दीपशिखा, मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएं, पाठ के साथी, श्रृंखला की कड़ियां, अतीत की चलचित्र, नीरजा, निहार आदि है। महादेवी वर्मा ने अपने प्रयत्नों से इलाहाबाद में 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' की स्थापना की। उन्होंने काव्य, गद्य, चित्रकला तथा शिक्षा सभी क्षेत्र में नए आयाम दिए। इनके काव्य में भाव समृद्धि तथा शैल्पिक सौंदर्य का संगम देखने को मिलता है। इनको 'मॉडर्न मीरा' भी कहा जाता है। इन्होंने भारतीय संस्कृति तथा भारतीय जीवन दर्शन को आत्मसात किया था। इनकी रचनाओं ने भारतीय ज्ञान परंपरा को नए आयाम से सुशोभित किया है।

सावित्रीबाई फुले–

सावित्रीबाई फुले ने स्त्रियों की शिक्षा को बढ़ावा दिया। सावित्रीबाई फुले ने 1848 में 17 वर्ष की आयु में पुणे के भिड़े वाड़ा में एक महिला विद्यालय की स्थापना की। यह भारत देश का प्रथम महिला स्कूल था, जिसकी स्थापना भारतीयों द्वारा की गई थी। यह भारत की पहली महिला शिक्षिका थी। ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर इन्होंने 150 छात्रों के साथ तीन स्कूलों की स्थापना 1851 में की। ज्योतिबा और सावित्रीबाई फुले ने 1850 के दशक में दो शैक्षिक ट्रस्टों को स्थापित किया। एक शिक्षिका के रूप में इन्होंने जो ज्ञान जन–जन तक संचालित किया वह भारतीय ज्ञान परंपरा में नीवं के समान है।

सरोजिनी नायडू–

सरोजिनी नायडू को 'भारत कोकिला' के नाम से जाना जाता है। इनकी प्रसिद्धि राष्ट्रीय नेता के रूप में है। यह कांग्रेस की अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश की प्रथम राज्यपाल थी। नारी– मुक्ति के समर्थन के रूप में इनका महत्वपूर्ण योगदान था। इनकी रचनाएं द गोल्डन थ्रेशहोल्ड, बर्ड ऑफ टाइम, ब्रोकन विंग है। यह एक स्वतंत्रता सेनानी तथा प्रख्यात महिला कवित्री थी। इन्होंने एक कवित्री तथा राजनेत्री के रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो आज की समस्याओं के समाधान तथा युवाओं को प्रेरित करने के लिए बहुत ही ज्यादा उपयोगी है।

मधुबाला–

मधुबाला का मूल नाम मुमताज जहां बेगम देहलवी था। यह 1950 तथा 60 के दशक के दौरान की प्रख्यात अभिनेत्री थीं। इन्हें 'वीनस ऑफ इंडियन सिनेमा' तथा 'द ब्यूटी ऑफ ट्रेजेडी' कहा गया। इनकी प्रसिद्ध भूमिका मुग़ल–ए–आज़म में अनारकली की थी। इनकी प्रमुख फिल्मों में महल, दुलारी, बेकसूर, तराना, अमर, चलती का नाम गाड़ी, हावड़ा ब्रिज, बरसात की रात, कला पानी आदि शामिल है। यह अभिनय में काफी कुशल थी, इनका अभिनय का ज्ञान भारतीय ज्ञान परंपरा को सुशोभित करता है।

डॉ. आनंदीबाई जोशी–

डॉक्टर आनंदीबाई जोशी 19वीं सदी की एक महान चिकित्सक थी। इनको आनंदीबाई गोपालराव जोशी के नाम से भी जानते हैं। इनका मूल नाम यमुना था। उनके समय में भारत में स्त्री शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी जाती थी, इसलिए आनंदीबाई जोशी संयुक्त राज्य अमेरिका में पढ़ने के लिए गई। यह देश की प्रथम महिला चिकित्सक थी। इनको चिकित्सा के क्षेत्र में अपार ज्ञान प्राप्त था, जो भारतीय ज्ञान परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

लता मंगेशकर–

लता मंगेशकर 'स्वर कोकिला' के नाम से प्रख्यात है। यह एक सर्वश्रेष्ठ भारतीय पार्श्व गायिका थी। जिन्हें भारत के सर्वोच्च पुरुस्कार भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया था इन्होंने 2,000 से अधिक भारतीय फिल्मों के साउंडट्रैक के लिए गाना रिकॉर्ड किया। भारतीय ज्ञान परंपरा में संगीत भी अत्यंत महत्व रखता है। संगीत ज्ञान वृद्धि के साथ–साथ व्यक्ति की मानसिक स्वास्थ्य को भी बेहतर करता है और संगीत के क्षेत्र में लता मंगेशकर ने अतुलनीय योगदान दिया, जो भारतीय ज्ञान परंपरा को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का कौशल रखता है।

कल्पना चावला–

कल्पना चावला एक अंतरिक्ष यात्री थी इनका जीवन हमे चुनौतियों का सामना करना सीखाता है, लोगों को प्रेरित करता है, जो कि 21वीं सदी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। कल्पना चावला की पहली अंतरिक्ष यात्रा 19 नवंबर 1997 को प्रारंभ हुई उनकी पहली अंतरिक्ष उड़ान स्पेस शटल कोलंबिया मिशन एसटीएस–87 पर थी। यहाँ इन्होंने मिशन विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया। उनका मुख्य कार्य शटल के रोबोटिक हाथ को संचालित करना था। इस मिशन ने बहुत ही महत्वपूर्ण आंकड़ों को संकलित किया। कल्पना चावला की दूसरी अंतरिक्ष यात्रा 16 जनवरी 2003 को प्रारंभ हुई उनकी यह अंतरिक्ष उड़ान भी स्पेस शटल कोलंबिया पर ही थी, जो मिशन एसटीएस–107 पर थी। इस मिशन में जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान तथा पदार्थ विज्ञान सहित कई क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया और महत्वपूर्ण आंकड़ों को एकत्र किया गया। कल्पना चावला ने अंतरिक्ष के बारे में जो सूचनाओं एकत्र की, वह सराहनीय है जो भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व के लिए उपयोगी है। कल्पना चावला प्रमुखता युवाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत रही है।

निष्कर्ष–

भारतीय ज्ञान परंपरा वर्तमान में विश्वव्यापी हो रही है। पाश्चात्य ज्ञान में सफल विद्या का अर्जन जीविका चलाने के लिए किया जाता है। हमारा भारतीय ज्ञान समाज को सही राह दिखाने वाला तथा व्यक्ति को परम ब्रह्म की प्राप्ति कराने वाला है। हमारी परंपरा में हाथ मिलाना नहीं बल्कि हाथ जोड़कर अभिवादन करना होता है, और हम देख सकते हैं कि इजरायल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू, प्रिंस चार्ल्स, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रे की तस्वीर आई थी, जिसमें वह नमस्ते करते दिखाई दिए थे। भारतीय ज्ञान परंपरा श्रवण व लेखन अर्थात मौखिक व लिखित दोनों रूपों में उपलब्ध है। जिसमें अनुशासन से मनुष्य को संस्कारित करते हैं। इसका मुख्य साधन कर्मवाद है। भारतीय सभ्यता व संस्कृति को उन्नत बनाने में स्त्रियों के अस्तित्व को किसी भी तरह नकारा नहीं जा सकता चाहे, हमे बात करे प्राचीन काल की या वर्तमान समय की सभी में स्त्रियों की अपनी एक अलग पहचान रही है जिसे प्राप्त करना उनके लिए बिलकुल भी आसान नही रहा है जिसके लिए उन्हें अपने परिवार के साथ–साथ समाज से भी लड़ना पड़ा इस शोधपत्र के माध्यम से हमने जाना कि, भारतीय ज्ञान अपने में एक अलौलिकता समाये हुए है जिसमे स्त्रियों ने काफी योगदान दिया हैं

सन्दर्भ ग्रंथ सूची –

अपाला. (2020). भारत डिस्कवरी https://bharatdiscovery.org/india/अपाला.

अनसूया. (2024). विकिपीडिया. https://en.wikipedia.org/wiki/Anasuya.

अभिनेत्री मधुबाला की जीवनी. (2023). नई सोच ऑनलाइन. https://nayisochonline.com/madhubala-biography-in-hindi/.

कीरों कृष्णन, (2016). वेदरू शची पौलोमी. सनातन धारा. https://sanatanadhara.com/veda/veda-saci-paulomi/.

गार्गीभारतीय परंपरा की स्त्री दार्शनिक. (2018). नईदुनिया. https://www.naidunia.com/spiritual/antaryatra-gargi-female-philosopher-of-indian-tradition-1704705.

घोषा. (2024). विकिपीडिया. https://en.wikipedia.org/wiki/Ghosha.

जागरण जोश. (2024). मीरा बाई ((1498 ईश्वी–1550 ईश्वी). https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%B0%E0%A4%BE-%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%88-1498-%E0%A4%88%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A5%801550-%E0%A4%88%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A5%80-1444739743-2.3&2-

बाउर, पी. (2024). मधुबाला. https://www.britannica.com/biography/Madhubala.

भारतीय गायक. (2024). लता मंगेशकर. ब्रितंनिका. https://www.britannica.com/biography/Lata-Mangeshkar.

महादेवी वर्मा. (2021). भारत डिस्कवरी https://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B5%E0%A5%80_%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%BE

fमिश्र, जी. (2023). भारतीय ज्ञान परंपरा और ज्ञान की संस्कृति. भारतीय आधुनिक शिक्षा, (3), पृ. 7–17.

मिश्रा, एस. (2022). भारतीय ज्ञान परंपरा. हुमनीटीज़ एंड सोशल साइंस रिव्यु, 7(1), पृ. 99–104.

मीणा, ए. सुभद्रा कुमारी चौहान. 202005040854451b946ed820.pdf.

रहमान, एम. मीराबाई. इग्नका. https://ignca.gov.in/coilnet/meera.htm.

रानी चेनम्मा. (2024). दृष्टि आई.ए.एस. https://www.drishtiias.com/daily-updates/daily-news-analysis/rani-chennamma.

रावत, वी. (2024). श्नारीश से जुड़े संस्कृत के श्लोक क्या हैं ?. क्योरा. https://hi.quora.com/%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%80%E0%A4%B8%E0%A5%87%E0%A4%9C%E0%A5%81%E0%A4%A1%E0%A4%BC%E0%A5%87%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4-%E0%A4%95%E0%A5%87.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति. (2020). मानव संसाधन विकास मंत्रालय. भारत सरकार.

रोमशा.(2014). हिन्दू स्क्रिप्तुरेस. https://www.hinduscriptures.in/gurus/rushi-women/romasha.

लोहनी, के. (2024). सावित्रीबाई फुले का शिक्षा में योगदान क्या था और साथ ही जानें उनके बारे में. विंग्स. https://leverageedu.com/blog/hi/trending-savitribai-phule-ka-shiksha-mei-yogdan/.

वैश्य, र. (2021). खूब लड़ी मर्दानी, वो तो झांसी वाली रानी थी...रानी लक्ष्मीबाई के प्रसिद्ध नारे आज भी भर देते हैं जोश. https://www.timesnowhindi.com/trending-viral/article/rani-lakshmi-bai-quotes-slogan-in-hindi-jhansi-ki-rani-death-anniversary/350939.

सरोजिनी नायडू का राजनीतिक जीवन. (2017). भारत डिस्कवरी. https://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%B8%E0%A4%B0%E0%A5%8B%E0%A4%9C%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%80_%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%AF%E0%A4%A1%E0%A5%82_%E0%A4%95%E0%A4%BE_%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A5%80%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%95_%E0%A4%9C%E0%A5%80%E0%A4%B5%E0%A4%A8.

साइफ़र्स, एस. (2024). आनंदीबाई गोपालराव जोशीरू 19वीं सदी की डॉक्टर और इतिहास निर्माता – एशियन. https://www.andasian.com/article/anandibai-gopalrao-joshi-19th-century-doctor-history-maker.

सनागला, एन. (2024). वागंभृणी द्य ऋषिका वाक् अम्भ्रनी द्य देवी सूक्तम के रचयिता. हिन्दुपद. https://hindupad.com/vagambhrini.

सिंह, वर्षा. (2023). मणिपुर वायलेंसरू मणिपुर में हिंसा की पूरी कहानी, कैसे शुरू हुई दो समुदायों के बीच हिंसक झड़प. जागरण. https://www.jagran.com/news/national-manipur-violence-what-is-happening-and-why-23477906.html.

सिमरन. (2024). कल्पना चावला की जीवनी, प्रारंभिक जीवन और शिक्षा, अंतरिक्ष मिशन, मृत्यु. आकाश. https://www.aakash.ac.in/blog/kalpana-chawla-biography-early-life-and-education-space-missions-death/